UMRAPRO

उमराह गाइड

UMRAH GUIDE

POWERED BY

ALTITUDE JOURNEY LLP

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

उमराह गाइड

मुकम्मल रहनुमाई, अहादीस और हवाला जात के साथ

उमराह की नियत और एहराम बांधने का तरीका:

नियत दिल के इरादे को कहते हैं, लेकिन उमराह की नियत करते हुए ज़बान से अल्फाज़ अदा करना ज़रूरी है। सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए उम्रह की नियत करें।

एहराम: एहराम बांधने का तरीका यह है कि ग़ुस्ल करें और फिर एहराम बांधें। औरत के लिए एहराम का कोई मख़सूस रंग नहीं है, वह किसी भी रंग का लिबास इस्तेमाल कर सकती है, बशर्त ये कि वह लिबास ज़ेब व ज़ीनत का इज़हार न हो।

एहराम बांधने से पहले की दुआ:

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَا لِي وَتَقَبَّلْهَا مِنِّي

अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल उमरता फ़यस्सिरहा ली व तक़ब्बल्हा मिन्नी

या अल्लाह! मैं उम्रह करने का इरादा रखता हूँ, तो मेरे लिए आसानी पैदा फ़रमा और मुझसे क़बूल फ़रमा।

सुन्नतुल एहराम:

इसके बाद दो रकअत सुन्नतुल एहराम पढ़ें।

1. पहली रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-काफिरून पढ़ें।
2. दूसरी रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-इख़लास पढ़ें।

उमराह की नियत:

सुन्नतुल एहराम की दो रकअत मुकम्मल करने के बाद यह दुआ पढ़ें:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ عُمْرَةً

लब्बैक अल्लाहुम्मा उमराह

ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ, उमराह की नियत के साथ।

तलबिया:

हदीस: रसूलूल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जिसने तलबिया पुकारा, उसके लिए पत्थर, दरख़्त और ज़मीन उसके लिए गवाही देगी। तिर्मिज़ी: 828

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ۝لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ۝إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ۝ لَا شَرِيكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक,
लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक,
इन्नल हम्दा वन-निअमता लका वल-मुल्क,ला शरीका लक

मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। आपका कोई शरीक नहीं है। मैं हाज़िर हूँ। बेशक तमाम तारीफ़ें और नेमतें तेरी ही हैं, और बादशाहत भी तेरी ही है। आपका कोई शरीक नहीं है।

मस्जिदुल हराम में दाख़िल होने की दुआ:

बैतुल्लाह शरीफ़ में बाबुस्सलाम से दाख़िल होने की कोशिश करें, और दाख़िल होते हुए बेहद ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ यह दुआ पढ़ें।

أَعُوذُ بِاللهِ الْعَظِيمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ، وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

بِسْمِ اللهِ، اَللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ،وَسَلِّم

اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي، وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीमी, वबी वजहीहील करीमी , व सुल्तानिहिल क़दीमी , मिनश्शैतानिर्रजीम। बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व-आलिहि व सल्लिम। अल्लाहुम्मग़फ़िरली ज़ूनूबी , वफ्ताह ली अब्वाबा रहमतिक।

मैं अज़मत व जलाल के मालिक, और उसकी इज़्ज़त और उसकी लाज़वाल सल्तनत की पनाह लेता हूँ शैतान मरदूद से। अल्लाह के नाम के साथ मैं दाख़िल होता हूँ। ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आल-ए-मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतें और सलामती नाज़िल फ़रमा। ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा, और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

ख़ाने काबा को पहली बार देखना

जैसे ही आप ख़ाने काबा को देखें, फ़ौरन यह दुआ पढ़ें:

اَللَّهُمَّ زِدْ هَذَا الْبَيْتَ تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا وَمَهَابَةً، وَزِدْ مَنْ شَرَّفَهُ وَكَرَّمَهُ مِمَّنْ حَجَّهُ أَوِ اعْتَمَرَهُ تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَتَعْظِيمًاوَبِرًّا

अल्लाहुम्मा ज़िद हाज़ल बैता तशरीफ़न व तअज़ीमन व तकरीमन व महाबतन, व ज़िद मन शर्रफ़हू व कर्रमहू मिम्मन हज्जहू अवि तमरहू तशरीफ़न व तकरीमन व तअज़ीमन व बिर्रा।

ऐ अल्लाह! इस घर के शरफ़, तअज़ीम, इज़्ज़त और रौब में इज़ाफ़ा फ़रमा, और जो इसे शरफ़ और इज़्ज़त, तअज़ीम बख़्शे इसका हज या उम्रह करे उसके शरफ़, इज़्ज़त, तअज़ीम और नेकी में भी इज़ाफ़ा फ़रमा।

तवाफ़ करने का तरीका:

1. मस्जिदुल हराम में दाख़िल होने के बाद सबसे पहले तवाफ़ करें।
2. तवाफ़ हजर-ए-अस्वद से शुरू करें। "बिस्मिल्लाहि, अल्लाहु अकबर" पढ़ें, हजर-ए-अस्वद को बोसा दें, फिर तवाफ़ शुरू करें। हजर-ए-अस्वद को छूना ज़रूरी नहीं है।
3. एक चक्कर मुकम्मल करके जब दोबारा हजर-ए-अस्वद के पास पहुँचें, तो यह एक चक्कर शुमार होगा। इसी तरह सात चक्कर मुकम्मल करें।
4. अगर तवाफ़ के दौरान वुज़ू टूट जाए तो तवाफ़ छोड़ कर पहले वुज़ू करें, फिर दोबारा तवाफ़ शुरू करें।
5. तवाफ़ के लिए वुज़ू ज़रूरी है। सई के लिए वुज़ू ज़रूरी नहीं है।

हदीस: तवाफ़ नमाज़ की तरह एक इबादत है, फ़र्क सिर्फ़ यह है कि तवाफ़ के दौरान बात करने की इजाज़त है।

— तिर्मिज़ी: 96

तवाफ़ की अदायगी

तवाफ़ हजर-ए-अस्वद से शुरू करें। "बिस्मिल्लाहि, अल्लाहु अकबर" पढ़ें, हजर-ए-अस्वद को बोसा दें, फिर तवाफ़ शुरू करें। हजर-ए-अस्वद को छूना ज़रूरी नहीं है।

بِسْمِ اللّٰهِ ۞ اَللّٰهُ أَكْبَرُ

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहु अकबर

शुरू अल्लाह के नाम से, अल्लाह सबसे बड़ा है।

तवाफ़ शुरू करते वक़्त यह दुआ पढ़ें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ،وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

सुब्हानल्लाहि, वल्हम्दु लिल्लाहि, व ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, व ला हौला व ला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह।

पाक है अल्लाह और अल्लाह के लिए ही सब तारीफ़ें हैं, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही सबसे बड़ा है, और अल्लाह की मदद के बग़ैर हम ना गुनाहों से बच सकते हैं और ना ही नेकी कर सकते हैं।

रुक्न-ए-यमानी और हजर-ए-अस्वद के दरमियान पढ़ी जाने वाली दुआ

हर चक्कर में अल्लाह तआला का ज़िक्र करें, और जो चाहें दुआएँ माँगें। अफ़ज़ल यह है कि हर चक्कर को इस दुआ पर मुकम्मल करें।

رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतन व फ़िल आख़िरति हसनतन व क़िना अज़ाबन्नार।

ऐ परवरदिगार! तू हमें दुनिया में भी ख़ैर व ख़ूबी दे, और आख़िरत में भी ख़ैर व ख़ूबी अता फ़रमा, और हमें जहन्नुम की आग से बचा। — अल-बक़रह: 201

मक़ाम-ए-इब्राहीम

जब तवाफ़ के सात चक्कर मुकम्मल हो जाएँ तो यह आयत-ए-शरीफ़ा की तिलावत करते हुए मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ की नियत से पढ़ें।

وَاتَّخِذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى

वत्तख़िज़ू मिम मक़ामि इब्राहीमा मुसल्ला।

और मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ।

— कुरआन, अल-बक़रह 2:125

मक़ाम-ए-इब्राहीम के क़रीब जगह न मिले तो उससे भी दूर यहाँ तक कि मस्जिद-ए-हराम में मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे किसी भी जगह नमाज़ पढ़ सकते हैं। यह वह मुबारक मक़ाम है जहाँ दुआएँ क़बूल होती हैं।

नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़:

1. पहली रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-काफिरून पढ़ें।
2. दूसरी रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-इख़लास पढ़ें।

हदीस: रसूल अल्लाह ﷺ तवाफ़ के बाद हमेशा यह दो रकअत नमाज़ पढ़ा करते थे। — सहीह मुस्लिम: 1218

आब-ए-ज़मज़म पीना

क़िबला रुख़ होकर ज़मज़म पिएँ, और शिफ़ा, इल्म और रिज़्क़ के लिए दुआ करें।

اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا۝ وَرِزْقًا وَاسِعًا۝ وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इल्मन नाफ़िआ , व रिज़्क़न वासिआ, व शिफ़ाअम मिन कुल्लिदा।

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नफ़ा बख़्श इल्म, कुशादा रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।

सई: सफ़ा और मरवा के दरमियान चलना

मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ अदा करने के बाद सई करने के लिए सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ जाएँ, और यह आयात पढ़ें:

إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ

इन्नस्सफ़ा वल-मरवता मिन शआइरिल्लाह।

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं।

सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ें, ख़ाने काबा की तरफ़ रुख़ करें, तीन मर्तबा अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर पढ़ें, हाथ उठाएँ, और दी गई दुआएँ तीन मर्तबा पढ़ें।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ۝
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۝ يُحْيِي
وَيُمِيتُ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू,
लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, युहयी व युमीतु, व हुवा
अला कुल्लि शैयइन क़दीर

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। मुल्क उसी का है। सब तारीफ़ें भी उसी के लिए हैं। वही ज़िंदगी देता है और वही मौत देता है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ۝ أَنْجَزَ وَعْدَهُ۝

وَنَصَرَ عَبْدَهُ۝ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदह, अंजज़ा वअ्दह, व नसरा अब्दह, व हज़मल अहज़ाबा वहदह।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे मुहम्मद ﷺ की मदद फ़रमाई, और उस अकेले ही ने तमाम जमाअतों को शिकस्त दी।

इसके बाद सफ़ा पहाड़ी से नीचे उतरें और मरवा की तरफ़ चलें। जिस जगह सब्ज़ रंग के सुतून नज़र आएँ, वहाँ मर्द तेज़ चलें और ख़वातीन मामूल की चाल से चलें, ख़वातीन को सब्ज़ लाइट्स के दरमियान दौड़ना नहीं होता।

और मरवा पहाड़ी पर चढ़ जाएँ और यहाँ भी अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करें, जिस तरह सफ़ा पर किया था। अगर आसानी हो तो सफ़ा और मरवा पर तमाम अज़कार और दुआएँ तीन-तीन बार पढ़ें। यह एक चक्कर मुकम्मल हो गया। इसी तरह सात चक्कर मुकम्मल करें, इससे सई मुकम्मल हो जाएगी।

इन दुआओं को तीन मर्तबा पढ़ने के बाद अपने लिए, अपने घर वालों के लिए, और अपने वालिदैन के लिए दुआ करें।

याद रहे तवाफ़ और सई के लिए कोई ऐसा मख़सूस ज़िक्र नहीं है, जो वाजिब हो, बल्कि हर ज़िक्र और दुआ जाइज़ है, जिसे आप आसानी से कर सकते हैं। तवाफ़ और सई करते हुए कुरआन-ए-मजीद की तिलावत भी कर सकते हैं।

अगरचे इस मौक़े पर हर दुआ करना जाइज़ है, लेकिन अफ़ज़ल यह है कि इस ज़िक्र व दुआओं पर इक्तिफ़ा किया जाए जो इस मौक़े पर हुज़ूर ﷺ से साबित है, और आप ﷺ से जो ज़िक्र व दुआएँ साबित हैं, वह हम अभी-अभी बयान कर आए हैं।

हल्क या क़सर या बाल कटवाना

ख़वातीन उंगली के पोरे के बराबर बाल काटें। सर मुंडवाना सिर्फ मर्दों के लिए है।

हल्क या क़स्र करने के बाद आपका उमराह मुकम्मल हो जाता है, और आप एहराम की हालत से बाहर हो जाते हैं।

उमराह मुकम्मल करने के बाद हुदूद-ए-हरम के अंदर बाल कटवाना ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स हुदूद-ए-हरम से बाहर बाल कटवाए, तो उस पर दम लाज़िम होगा।

उमराह अदा करने के बाद

मर्द और ख़वातीन नफ़्ल तवाफ़ कर सकते हैं, और दुआ, ज़िक्र-ए-इलाही और इस्तिग़फ़ार में मशग़ूल रहें।

हर नफ़्ल तवाफ़ के बाद मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत वाजिबुत्तवाफ़ अदा करें।

1. पहली रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-काफिरून पढ़ें।
2. दूसरी रकअत में सूरह-ए-फ़ातिहा के बाद सूरह-ए-इख़लास पढ़ें।

उमराह क्या है?

उमराह बैतुल्लाह यानी काबा की ज़ियारत का एक मुक़द्दस अमल है, जो साल के किसी भी वक़्त किया जा सकता है। यह हज से छोटा, लेकिन इस्लाम में बहुत फ़ज़ीलत वाला अमल है।

मीक़ात:

मक्का मुकर्रमा के चारों अत़राफ़ कुछ मक़ामात का तय्युन किया गया है जिनको मीक़ात कहते हैं। उन मक़ामात से एहराम के बग़ैर आगे गुज़रना मना है। हवाई जहाज़ से सफ़र की सूरत में अगर जहाज़ के अंदर एहराम बांधना मुश्किल हो तो अपने घर से या एयरपोर्ट से ही एहराम बांध सकते हैं।

अहादीस की रोशनी में उम्रह की फ़ज़ीलत:

एक उमराह दूसरे उमराह के दरमियान गुनाहों का कफ़्फ़ारा है। — सहीह बुख़ारी: 1773, सहीह मुस्लिम: 1349

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा क्या औरतों पर जिहाद फ़र्ज़ है? नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हाँ ऐसा जिहाद जिसमें जंग नहीं वह है हज और उम्रह — सुनन अबी माजा 2901

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

UMRAPRO

Your Umrah Guide.
Anytime. Anywhere.

Powered By

ALTITUDE JOURNEY LLP

UmraPro.com